IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चित्ति व विराट संबंधी विचार

तुशार शर्मा

शोद्धार्थी दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र

सार :-

दैशिक शास्त्र के अनुसार 'चित्ति' एक राष्ट्रवाचक तत्व हैं 'चिति' सम्बन्धी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार की अगर हम बात करें तो वस्तुतः यह उनके राष्ट्रवादी मानस की उपज हैं चित्ति किसी राष्ट्र की आत्मा व मौलिकता होती हैए जो राष्ट्र की चेतन्यए आत्माए विवेकए राष्ट्र के विभिन्न संस्थाओं के उदयए राष्ट्र के उत्थान-पतन को निर्धारित करती हैं चित्ति जन्मजात होती हैए और प्रत्येक राष्ट्र व समाज 'चित्ति' को लेकर पैदा होता हैं राष्ट्र के उत्थान का वास्तविक कारण 'चिति' का प्रकाश या मौलिकता से जुडाव और किसी राष्ट्र के पतन का कारण भी 'चित्ति ' का अभाव हैं स्वयं को अभिव्यक्त कर पाना समाज की चिति है तथा चिति ही व्यक्तियों को विभिन्न पुरुषार्थों के संपादन की सुविधा प्राप्त कराने के लिए अनेक संस्थाओं को जन्म देती हैं राष्ट्र की समस्त संस्थाएं चित्ति से ही उत्पन्न होती हैं। दैशिक शास्त्र के अनुसार अगर हम बात करें तोए राष्ट्र का प्रथम तत्व 'चित्ति' व् दूसरा तत्व 'विराट' हैं पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'चिति' व 'विराट' सम्बन्धी अवधारणा प्राचीन भारतीय साहित्य की अवधारणा से अलग नहीं हैए बल्कि इसके महत्व को जानकर इसकी युगानुकूल व्याख्या करने का श्रेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी को जाता है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चित्ति व विराट सम्बन्धी अवधारणा प्राचीन भारतीय साहित्य की अवधारणा पर ही आधारित हैं

संकेत शब्द :-दैशिकए चित्तिए राष्ट्रवाचकए विराट, भारतीय साहित्य ।

भूमिका :-

दैशिक शास्त्र में राष्ट्र के लिए 'जातिश शब्द का प्रयोग किया गया है। दैशिक शास्त्र के अनुसार जिस प्रकार अनेकों तत्वों के संघात से मनुष्य का निर्माण होता है ठीक उसी प्रकार एक 'जातिश अर्थात राष्ट्र के निर्माण में भी बहुत सारे तत्वों का योगदान रहता हैए जिनमें दो तत्व प्रमुख हैं- चित्ति व विराट। चित्ति राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति में परम सुख की भावना के रूप में विद्यमान रहती है। चित्ति से ही जागृत होने वाली शक्ति जो अनिष्टों से राष्ट्र की रक्षा करती है उसे विराट की संज्ञा दी गयी है।[1] पंडित दीनदयाल उपाध्याय की चित्ति व विराट सम्बन्धी अवधारणा प्राचीन भारतीय अवधारणा से अलग नहीं हैं पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन संस्कृति, परम्परा और अपनी जड़ों से गहरा लगाव रखते थे। सनातन धर्म संस्कृति में उन्हें गहरी आस्था थी, परन्तु दीनदयाल उपाध्याय आधुनिकता विरोधी विचारक भी नहीं थेः अपनी मौलिकता

से कटकर आधुनिक बनने की प्रवृत्ति को दीनदयाल उपाध्याय समाज के लिए हानिकारक समझते थेः पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी इस बात को भलीभांति जानते थे कि पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण हमारी राष्ट्रीय चित्ति के अनुकूल नहीं हैः पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव और उसका अन्धानुकरण को दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राष्ट्र की आत्मा के विरुध मानते थेः चित्ति और विराट राष्ट्र की आत्मा और शक्ति है, इन दोनों के जीवित रहने से ही राष्ट्र का अस्तित्व रहता है इसीलिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने चिति व विराट की अवधारणा दी ताकि राष्ट्र का अस्तित्व बना रहेः

विपरीत परिस्थितियों में राष्ट्र अस्तित्व के बने रहने का मुख्य कारण राष्ट्र की मौलिकता या चित्ति के प्रकाश का बना रहना है। जब जनमानस में राष्ट्र की परम्पराओं, मौलिकता, संस्कृति के प्रति लगावए विश्वास और आस्था रहती है, तो यही कारक राष्ट्र को शक्ति प्रदान करने में सहायक सिद्ध होते हैए इन कारकों को ही विराट की संज्ञा दी गयी है।

शोध विधि :-

प्रस्तुत शोध पत्र में व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया गया हैए जिसमें द्वितीयक स्त्रोतों से सामग्री एकत्रित कर उनकी व्याख्या की गई है, और इसमें दीनदयाल उपाध्याय के मौलिक विचारों पर आधारित उनकी पुस्तकों के साथ साथ उनके विचारों से संबंधित विभिन्न पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया है।

शोध उद्देश्य :-

1ण्‘चित्तिश और विराट की अवधारणा को स्पष्ट करनाः

2. वर्तमान संदर्भ में चिति व विराट के महत्व को जाननाः

चित्ति व् विराट पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार :-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की राष्ट्रवाद की अवधारणा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा है किसी भूमि विशेष पर रहने वाले लोगों का समूह जब एक लक्ष्य एक मिशन व एक आदर्श के साथ उस भूमि पर रहता है तथा उस भूमि के प्रति मातृत्व भाव रखता हैए तब वह राष्ट्र अस्तित्व में आता हैः दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्र के प्रति आस्था और विश्वास का बने रहने को राष्ट्र की चित्ति के रूप में देखते हैं, क्योंकि यही आस्था और विश्वास किसी राष्ट्र के अस्तित्व की रक्षा के लिए अनेकों विपरीत परिस्थितियों से लड़ सकता हैः पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर की कल्पना नहीं की जा सकती, ठीक उसी प्रकार से चिति के बिना राष्ट्र की कल्पना करना संभव नहीं हैः राष्ट्र की भी आत्मा होती है जिसे शास्त्रीय नाम ‘चित्तिश दिया गया हैः ‘चित्तिश राष्ट्र को जन्मजात ही प्राप्त होती हैंः यह किसी भी प्रकार के भौगोलिक अथवा ऐतिहासिक कारणों का परिणाम नहीं होतीः हमारे राष्ट्र की चित्ति क्या हैः इसका स्वरूप क्या हैः इसकी व्याख्या करना तो कठिन है परंतु जिन महापुरुषों ने चित्ति से प्रकाशमान जीवन जीया है तथा जिनके जीवन में चित्ति का प्रकाश उज्ज्वलतम रहा हैए ऐसे महापुरुषों के जीवन की घटनाओं व जीवन की क्रियाओं का विश्लेषण कर हम अपने राष्ट्र की चित्ति की झलक देख सकते हैं।[5] हमारे विद्वानों ने चित्ति को श्धर्मश के नाम से पुकारा है। आज धर्म शब्द के बहुत से भ्रामक अर्थ प्रचलित हो गए हैं। लोग धर्म शब्द को अंग्रेजी धर्म का पर्याय मानने लगे हैं तथा यूरोप और अन्य देशों में धर्म और धर्म के नाम पर हुए अमानवीय अत्याचारों के संबंध में चिढ़ने लगे हैं। वे धर्म को नष्ट करने पर तुले हुए हैं या जो नरमपंथी दल के हैं वे चाहते हैं कि धर्म केवल निजी जीवन तक ही सीमित रहे। वे धर्म के साथ राष्ट्र और समाज के संबंध को स्वीकार नहीं करते हैं।[5]

चित्ति किसी राष्ट्र का वह जन्मजात गुण है, जिसे बदला नहीं जा सकताь जिसके बदलने से राष्ट्र का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगाь जिस तरह आत्मा के बिना शरीर का कोई अस्तित्व नहीं ठीक उसी प्रकार चित्ति के बिना राष्ट्र ही समाप्त हो जाएगा ь हमारा धर्म ही हमारे राष्ट्र की चित्ति है। धर्म के बिना राष्ट्र जीवन का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

प्राचीन भारतीय धार्मिक ग्रंथों में चित्ति का वर्णन मिलता हैь इन धर्म ग्रंथों में चित्ति को चेतनाए आत्मचेतना व अपरा शक्ति इत्यादि कहा गया हैь श्री अरविंद घोष ने ‘चित्तिश को चैत्य पुरुष के रूप में वर्णित किया हैь चित्ति एक वेदान्तिक अवधारणा हैь देवी भागवत पुराण ;43648द्ध में इसका प्रयोग स्त्री देवी के रूप में हुआ हैь दीनदयाल उपाध्याय ने ‘चित्तिश की अवधारणा को दैशिक शास्त्र से ग्रहण किया हैь दैशिक शास्त्र में ‘राष्ट्रश के लिए ‘जातिश शब्द का प्रयोग किया गया है तथा जाति के दो प्रधान तत्व माने गए हैं ‘चित्तिश व ‘विराटश्छ इस तरह किसी क्षेत्र विशेष में विकसित होने वाली जाति या राष्ट्र की मूल संस्कृति जिस पर उस राष्ट्र की पहचान बनी है, वह ही उस राष्ट्र की ‘चित्ति’ या आत्मा है और उस मूल संस्कृति के प्रति अटूट आस्था व् विश्वास ही ‘विराट’ है ь भारत की संस्कृति जो हजारों वर्षों का परिणाम है। जिसे हम सनातन संस्कृति कहते हैए जो आज भी विद्यमान है। वही भारतीय राष्ट्र की चित्ति है। भारत की संस्कृति के प्रति भारत के लोगों का अथाह प्रेम जो सदियों की गुलामी के बाद भी नही डगमगाया वह ही विराट है ь

समाज में रहते हुए व्यक्ति अनेक प्रकार के कार्यों को पूर्ण करने में व्यस्त हो जाता हैь जिसके परिणाम स्वरूप उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता हैए परंतु इससे व्यक्ति की आत्मा में कोई वस्तु नहीं जुड़तीь ठीक उसी प्रकार राष्ट्र की संस्कृति में ऐतिहासिक कारकोंए भौगोलिक कारकोंए वातावरण के प्रभावए सामाजिक प्रयत्नों इत्यादि कारकों के कारण बदलाव आते रहते हैंь जिससे राष्ट्र व उसकी संस्कृति प्रभावित होती हैए परंतु चित्ति इन सब परिवर्तनों से अछूती रहती है वह तो मूलभूत है७ ‘चित्तिश का कार्य उस दिशा को निर्धारित करना होता है जिस दिशा में राष्ट्र की संस्कृति को ले जाना होता हैь जो कुछ चित्ति के अनुरूप होता है उसे संस्कृति में शामिल कर लिया जाता है तथा जो ‘चित्तिश के अनुकूल नहीं होता उसे छोड़ दिया जाता हैь यही हमारी एक अलग पहचान है ь

प्रत्येक राष्ट्र की चिति अन्य राष्ट्रों से भिन्न होती है यही कारण है कि कोई भी राष्ट्र किसी अन्य राष्ट्र का उपनिवेश बनकर नहीं रहना चाहताь ‘चित्तिश की झलक किसी भी राष्ट्र में रहने वाले निवासियों की संस्कृतिए साहित्य व उनके धर्म में देखी जा सकती हैь ‘चित्तिश वह साधन है जिसके द्वारा किसी राष्ट्र की सभ्यता का निर्माण होता है तथा उस राष्ट्र में स्वस्थ परंपराओं का निर्माण होता हैь और वही परम्पराएँ उस राष्ट्र की पहचान बन जाती है, उन परम्पराओं से राष्ट्र जाना जाता हैь चित्ति किसी भी कार्य के सही या गलत होने की मानक शक्ति है। प्रगतिए उत्थान व धर्म का मार्ग चित्ति ही है। प्रकृति से लेकर संस्कृति तक चित्ति का सर्वव्यापक प्रभाव है।

‘चितिश के संदर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी कहते हैंए भकिसी भी राष्ट्र का अस्तित्व उसकी ‘चितिश के कारण होता हैь चिति के उदयावपात से राष्ट्र का उदयावपात होता है तथा चित्ति के पतन से राष्ट्र का पतन होता हैь भारतीय राष्ट्र के भी उत्थान व पतन का वास्तविक कारण हमारी ‘चितिश का प्रकाश अथवा उसका अभाव हैछ

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि भभारत को बलशाली और वैभवशाली तभी बनाया जा सकता हैए जब भारत की चित्ति को समझा जा सके। चित्ति को बिना समझे राष्ट्र को समझना दुष्कर है तथा बिना राष्ट्र को समझे इसे बलशाली और वैभवशाली बनाना असंभव है।" उनके अनुसार चित्ति के स्वरूप कि व्याख्या करना मुश्किल है परंतु उसका साक्षात्कार करना संभव है। हमारी राष्ट्रीय चित्ति की झलक हम उन महापुरुषों में देख सकते हैं जिनके जीवन में चित्ति का प्रकाश उज्ज्वलतम रहा है।[9]

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है तथा एक दूसरे के साथ सहयोग व सहानुभूति का गुण उसे प्रकृति से ही प्राप्त है। ये गुण प्रत्येक व्यक्ति के अंदर विद्यमान रहते हैं। यही मानवीय गुण व्यक्ति को समाज व राष्ट्र हेतु त्याग व बलिदान देने के लिए प्रेरित करते हैं। एक दूसरे के साथ परस्पर सहानुभूति की यह भावना व्यक्तिगत शक्ति को सामूहिक शक्ति के रूप में संगठित्त कर प्रकट करती हैए यही शक्ति विराट है।[10] राष्ट्र के जीवन में विराट का वही स्थान है जो शरीर में प्राण का है प्राण से हमारी कर्मेंद्रियों को शक्ति प्राप्त होती हैь किसी राष्ट्र में विराट प्रभावशाली होने पर उस राष्ट्र की संस्थाएं अधिक सक्षम बनती है परंतु अगर विराट जागृत न हो तब राष्ट्र व उसकी संस्थाएं भी असक्षम हो जाती हैь[11]

इसलिए विराट का जागृत रहना अति आवश्यक है, राष्ट्र संस्कृति और परम्पराओं के प्रति प्रगाढ़ प्रेम और आस्था ही विराट का जागृत रहना है, जब हम अपनी संस्कृति परम्पराओं को हीन समझने लगे तो समझो राष्ट्र शक्ति या विराट कमजोर हो रही है ।

दैशिक शास्त्र में 'चित्तिश को राष्ट्र का प्रथम तत्व व विराट को द्वितीय तत्व की संज्ञा दी गई है। जब संसार में सत्व् की प्रधानता रहती है तब समाज में व्यक्तियों की स्थिति सरल रहती है। ऐसे समाज में कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों का अहित नहीं चाहताए परंतु जब समाज व व्यक्तियों में सत्त्व के बजाय रजस की वृद्धि होने लगती है तथा व्यक्ति दूसरों का अहित करने लगता है तब विराट इस जटिलता को सुलझाने के लिए ऐसे व्यक्तियों को चुनता है जिनमें विराट का तेज विशेषत: व्याप्त हो। अपने मुंबई भाषण में दीनदयाल उपाध्याय कहते हैंए भजैसे राष्ट्र का अवलंब चिति होती है वैसे ही जिस शक्ति से राष्ट्र की धारणा होती है उसे विराट कहते हैं। विराट राष्ट्र की वह कर्मशक्ति है जो 'चित्तिश से जागृत और संगठित होती है। विराट का राष्ट्र जीवन मैं वही स्थान है जो शरीर में प्राण का स्थान होता है। प्राण से ही इंद्रियों को शक्ति मिलती है। बुद्धि को चैतन्य प्राप्त होता है और आत्मा शरीरस्थ रहती है राष्ट्र में भी विराट के सबल होने पर ही उसके भिन्न-भिन्न अवयव अर्थात संस्थाएं सक्षम और समर्थ होती है। विराट के आधार पर ही प्रजातंत्र सफल होता है और बलशाली बनता है।[12]

इस प्रकार चिति व् विराट एक राष्ट्र या जाति की मौलिकता, आत्मा व् प्राण है, और विराट उस मौलिकता पर विश्वास की एक सशक्त शक्ति है, जो उस राष्ट्र की पहचान को कभी धूमिल नही होने देती, परिस्थितियां चाहे कितनी भी विपरीत हो, भारत राष्ट्र के रूप में अपनी इन्हीं शक्तियों के कारण वर्षों की गुलामी के बाद भी अपने मूल रूप में आज भी जीवित है, राज्य के रूप में बेशक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा रहा हो।[13]

निष्कर्ष :-

'चितिश व 'विराटश की अवधारणा की मूल जड़े प्राचीन भारतीय साहित्य में मिलती हैए परंतु वर्तमान समय में इसके महत्व को जानकर इसकी युगानुकूल व्याख्या देने का श्रेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय को जाता है। 'चित्तिश एक ऐसा मापदंड है जिसके आधार पर हम किसी कार्य को सही अथवा गलत ठहराते हैं। अगर हमें अपने राष्ट्र का उत्थान करना है तब हमें भारतीय राष्ट्र की स्थिति की प्रकृति के अनुरूप कार्य करना होगा। अगर हम वर्तमान परिस्थितियों के बारे में सोचें तो हमें यह कहना पड़ेगा कि हमारी राष्ट्रीय चित्ति क्षीण हो गई है। वर्तमान संदर्भ में ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है जो चिति के अनुरूप जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वर्तमान समय में यह भ्रम पैदा हो गया है कि अगर हम भौतिक दृष्टि से संपन्न हो जाते हैं तो हम परम सुख को प्राप्त कर लेंगे। यह सोच 'चितिश के अनुकूल नहीं है। लोग यह भूल जाते हैं कि भौतिकता की दौड़ हमारे राष्ट्र की 'चितिश की प्रकृति नहीं है। ऐसा समाज जो 'चितिश के अनुरूप व्यवहार नहीं करता वह समाज निद्रितए असंगठित व विराटशून्य हो जाता है तथा अपने पतन की ओर अग्रसर हो जाता है। परन्तु इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि समाज का एक बहुत बड़ा भाग राष्ट्रीय संस्कृति व राष्ट्र की मौलिकता के प्रति सचेत है, और निरंतर जन जागरण का काम करता है, जो इस राष्ट्र की चिति व् विराट को कभी क्षीण नहीं होने देंगे। ऐसी प्रबल इच्छा शक्ति ही राष्ट्र विराट को जागृत रखता है, जो उसकी चिति को कभी धूमिल नहीं होने देती ।

भारतीय राष्ट्र की दिव्य चिति के कारण ही यहां सार्वजनिक जीवन में व्यक्तिगत चरित्र का बहुत महत्व है। हमारे समाज में चिति के अनुरूप प्रकाशमान जीवन जीने वालों का महत्व बढ़ जाता है। इसलिए भारतीय राष्ट्र की समृद्धि व राष्ट्र को चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने के लिए हमें अपने जीवन को हमारी 'राष्ट्रीय चितिश के अनुरूप ढालना पड़ेगा। एक ऐसी शक्ति जिससे राष्ट्र को ऊर्जा व शक्ति मिलती हैए उसे हम विराट कहते हैं। विराट को 'चित्तिश का सहायक कह सकते हैं। विराट को राष्ट्र के प्राण की संज्ञा दी गई है। जिस प्रकार शरीर की कर्मेंद्रियां प्राणों के बिना निष्क्रिय हैए उसी प्रकार एक राष्ट्र भी बिना प्राणशक्ति के जीवित नहीं रह सकता। वर्तमान समय में हमारे राष्ट्र के सामने पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव वर्तमान पीढ़ियों पर पड़ता दिख रहा है, जो हमारे राष्ट्र की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। जिस तरह सदियों से हम अपनी राष्ट्रीय चित्ति की रक्षा करते आये हैं, भविष्य में भी हमें अपने राष्ट्र की चित्ति को प्रकाशमान बनाए रखना है।

संदर्भसूची :-

1. बद्रीसाह टुलधरियाए :"दैशिक शास्त्रए" पुनरुत्थान ट्रस्टए अहमदाबादए 2007ए पृ° 18-19.
2. महेशचंद्र शर्माए रूभदीनदयाल उपाध्याय कृतित्व एवं विचारए" प्रभात प्रकाशनए दिल्लीए 2018ए पृ° 326
3. संजीव कुमार शर्माए रूभपंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व एवं कृतित्वए" अनु बुक्स प्रकाशनए दिल्लीए 2018ए पृ 33
4. अमरजीत सिंहए रूभएकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्यायए" प्रभात प्रकाशनए दिल्लीए 2018ए पृ 249.250
5. *Internet source* : http://deendayalupadhyay.org/chiti_hindi.html (Accessed on 15-07-2021).
6. महेशचंद्र शर्माए रूभपंडित दीनदयाल उपाध्याय कृतित्व एवं विचारए" प्रभात प्रकाशनए दिल्लीए 2018ए पृ° 321
7. महेश चंद्र शर्माए रूभएकात्म मानववाद तत्व मीमांसा सिद्धांत विवेचनए" प्रभात प्रकाशनए दिल्लीए 2017ए पृ° 98
8. अमरजीत सिंहए रूभएकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्यायए" प्रभात प्रकाशनए दिल्लीए 2018ए पृ° 250
9. डॉ सौरभ मालवीय
10. मनोज कुमार सक्सेनाए : "पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानव दर्शन-विविध आयामए"अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्सए नई दिल्लीए 2018ए पृ 50-51.
11. महेशचंद्र शर्माए रूभदीनदयाल उपाध्याय कृतित्व एवं विचारए" प्रभात प्रकाशनए दिल्लीए 2018ए पृ° 325. 326
12. महेशचंद्र शर्माए रू भपंडित दीनदयाल उपाध्याय कृतित्व एवं विचारए" प्रभात प्रकाशनए दिल्लीए 2018ए पृ° 325
13. डॉ रवींद्रअग्रवालए रू भपंडित दीनदयाल जी प्रेरक विचार," विद्या विहारए नई दिल्लीए 2018ए पृ° 55.56